RNI : UAHIN/25/A3210

आवाम इंडिया

हिन्दी साप्ताहिक

वर्षः 01 | अंकः 03 देहरादून, शुक्रवार 24 अप्रैल 2026 | मूल्य 2 रुपये | पृष्ठः 8 | www.aawamindia.com

चारधाम यात्रा का विधिवत शुभारम्भ

उमड़ा आस्था का सैलाब

देहरादून। भव्यता और दिव्यता का समागम अनूठी भक्ति और अपार श्रद्धा का उल्लास चारधाम यात्रा महज एक यात्रा नहीं हमारी आस्था और संस्कृति का प्रतीक जिसका विधि वत शुभारम्भ हो चुका है। मां यमनोत्री, मां गंगोत्री, भगवान केदारनाथ, भगवान बद्रीनाथ और पंच केदार के कपाट विधिविधान एवं वैदिक मंत्रोच्चार के साथ ग्रीष्मकाल हेतु श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोल दिए गए हैं। आस्था और भक्ति के इस समागम में श्रद्धालुओं में जबरदस्त उत्साह और श्रद्धा भाव दिखायी दे रहा है। वहीं सरकार भी बेहतर व्यवस्थाओं पर संतोष व्यक्त कर रही है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी स्वयं इस पावन घड़ी के साक्षी बने हैं।

रुद्रप्रयाग। श्रद्धा, आस्था और दिव्यता की अद्भुत त्रिवेणी, ग्यारहवें ज्योर्तिलिंग श्री केदारनाथ धाम के कपाट आज बुधवार को विधि-विधान एवं वैदिक मंत्रोच्चार के साथ श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोल दिए गए हैं। प्रातः 8 बजे शुभ मुहूर्त में कपाट खुलते ही पूरा धाम "हर-हर महादेव" और "जय श्री केदार" के उद्घोष से गूंज उठा। धाम में पहली पूजा प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नाम से की गई।

इस पावन अवसर पर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी भी उपस्थित रहे और उन्होंने बाबा केदारनाथ के दर्शन कर प्रदेश एवं देश की सुख, समृद्धि और शांति की कामना की। सिख रेजीमेंट के बैंड की भक्तिमय धुनों के बीच कपाट उद्घाटन का यह दिव्य क्षण और भी अलौकिक बन गया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने समस्त देशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि केदारनाथ धाम न केवल सनातन ध र्मावलंबियों की आस्था का प्रमुख केंद्र है, बल्कि यह भारत की समृद्ध आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत का भी प्रतीक है। उन्होंने कहा कि चारधाम यात्रा हर वर्ष नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है और इस वर्ष भी बाबा केदार के आशीर्वाद से यात्रा ऐतिहासिक होगी। मुख्यमंत्री ने कहा की राज्य सरकार द्वारा चारधाम यात्रा को सुरक्षित, सुव्यवस्थित एवं सुगम बनाने के लिए व्यापक इंतजाम किए गए हैं।

शेष पृष्ठ 2 पर

देहरादून। भगवान श्री बद्रीनाथ के कपाट गुरुवार प्रातः 6 बजकर 15 मिनट पर विधिविधान एवं वैदिक मंत्रोच्चार के साथ ग्रीष्मकाल हेतु श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोल दिए गए। कपाट खुलते ही पूरा बद्रीनाथ धाम भक्ति और श्रद्धा के भाव से सराबोर हो उठा। इस पावन अवसर पर देश-विदेश से पहुंचे लगभग

15 हजार श्रद्धालुओं ने भगवान बद्री विशाल एवं अखंड ज्योति के दर्शन कर पुण्य लाभ अर्जित किया।

मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने कपाट उद्घाटन के शुभ अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नाम से पहली महाभिषेक पूजा संपन्न कर देश एवं प्रदेश की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने मंदिर परिसर स्थित लक्ष्मी मंदिर, गणेश मंदिर तथा आदि गुरु शंकराचार्य गद्दी सहित अन्य मंदिरों में विधिवत पूजा-अर्चना की।

मुख्यमंत्री ने धाम पहुंचे तीर्थयात्रियों का आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए यात्रा व्यवस्थाओं का फीडबैक भी लिया। उन्होंने कहा कि चारधाम यात्रा को सुरक्षित, सुगम एवं सुव्यवस्थित बनाने के लिए राज्य सरकार द्वारा व्यापक स्तर पर तैयारियां की गई हैं। श्रद्धालुओं की सुविधा, सुरक्षा और बेहतर अनुभव सुनिश्चित करने हेतु हर स्तर पर व्यवस्थाओं को सुदृढ़ किया गया है।

'मुख्यमंत्री ने देश विदेश से आने वाले सभी श्रद्धालुओं से हरित एवं स्वच्छ चारधाम यात्रा में सहयोग करने का आह्वान करते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया।

शेष पृष्ठ 2 पर

गंगोत्री /यमुनोत्री /उत्तरकाशी। अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर विश्व प्रसिद्ध गंगोत्री एवं यमुनोत्री धाम के कपाट रविवार को वैदिक मंत्रोच्चराण पूजा अर्चना के साथ श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोल दिए गए। गंगोत्री धाम

के कपाट 12 बजकर 15 मिनट व यमुनोत्री धाम के कपाट ठीक दोपहर 12 बजकर 35 मिनट पर देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोले गए। वहीं रविवार को दोनो ध ामों के कपाट खुलने के बाद चारधाम यात्रा का भी विधिवत शुभारंभ हो गया। विश्व प्रसिद्ध गंगोत्री धाम के कपाट रविवार को अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर वैदिक मंत्रोच्चराण व पूजा अर्चना के साथ श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोल दिए गए। वहीं यमुनोत्री धाम के कपाट रविवार को कृतिका नक्षत्र कर्क लग्न व आयुष्मान योग में विधिवत मंत्रोचारण के साथ दोपहर 12 बजकर 35 मिनट पर श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोल दिए गए।

मां यमुना की डोली अपने शीतकालीन प्रवास खरसाली (खुशीमठ) से अपने भाई शनिदेव की अगुवाई में कालिंदी पर्वत की तलहटी में स्थित यमुनोत्री धाम के लिए आज शुभ मुहूर्त को रवाना हुई। खरसाली में ग्रामीणों एवं लोक देवताओं की डोलियों ने यमुना जी की डोली को भावुक कर देने वाले माहौल से विदा किया। यमुनोत्री ध ाम में हवन,पूजा के बाद वैदिक मंत्रोचार व विधि विधान के साथ 12:35 पर यमुनोत्री धाम के कपाट श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोल दिए गए।

इधर रविवार सुबह मां गंगा की उत्सव डोली भैरव घाटी स्थित भैरव मंदिर से गंगोत्री के लिए रवाना हुई।

पृष्ठ एक का शेष

उमड़ा आस्था का सैलाब.....

केदारनाथ कपाट.....

उन्होंने सभी उत्तराखंडवासियों से देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं के प्रति सेवा और आतिथ्य भाव बनाए रखने का आह्वान किया।

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को बाबा केदारनाथ का अनन्य भक्त बताते हुए कहा कि वर्ष 2013 की आपदा के बाद उनके मार्गदर्शन में केदारनाथ धाम का भव्य एवं दिव्य पुनर्निर्माण हुआ है, जो आज विश्वभर के श्रद्धालुओं को आकर्षित कर रहा है।भगवान केदारनाथ की पंचमुखी उत्सव डोली शीतकालीन गद्दीस्थल श्री ओंकारेश्वर मंदिर, उखीमठ से गुप्तकाशी, फाटा और गौरीकुंड होते हुए कल शाम ही धाम पहुंच चुकी थी। इसी क्रम में कपाट खुलने की प्रक्रिया आज प्रातः 5 बजे से प्रारंभ हुई। इसके बाद प्रातः 8 बजे रावल भीमाशंकर लिंग, पुजारी टी गंगाधर, मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, विधायक केदारनाथ आशा नौटियाल, तीर्थ पुरोहित उमेश चंद्र पोस्ती सहित धर्माचार्यों एवं वेदपाठियों ने मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश कर विधिवत पूजा-अर्चना की। देव आवाहन एवं लोककल्याण के संकल्प के साथ ठीक 8 बजे कपाट श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए। कपाट उद्घाटन के अवसर पर श्री केदारनाथ मंदिर को 51 क्विंटल से अधिक फूलों से भव्य रूप से सजाया गया। कपाट खुलते ही हेलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा की गई, जिससे श्रद्धालु भाव-विभोर हो उठे।कपाट खुलने के अवसर पर श्रीमती गीता धामी, बीकेटीसी अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी, विधायक केदारनाथ आशा नौटियाल, जिला पंचायत अध्यक्ष रुद्रप्रयाग पूनम कठैत, ब्लॉक प्रमुख ऊखीमठ पंकज शुक्ला, जिला पंचायत सदस्य अमित मैखंडी, पूर्व जिलाध्यक्ष महावीर पंवार, तीर्थ पुरोहित उमेश चंद्र पोस्ती, सहित बड़ी संख्या में तीर्थ पुरोहितगण, हकहकूकधारी एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे।

बद्रीनाथ कपाट.....

चारधाम यात्रा के शुभारंभ के साथ ही बद्रीनाथ धाम में आस्था, परंपरा और सुव्यवस्थित व्यवस्थाओं का अद्भुत संगम देखने को मिला, जो श्रद्धालुओं के लिए एक दिव्य और यादगार अनुभव बनेगा।

लोक संस्कृति की झलकः जागरों पर झूम उठा बद्रीनाथ धाम

कपाट खुलने के इस ऐतिहासिक अवसर पर माणा एवं बामणी गांव की महिलाओं ने पारंपरिक जागरों के साथ मंदिर प्रांगण में झुमैलो नृत्य प्रस्तुत किया, जिससे संपूर्ण वातावरण लोक संस्कृति और आस्था के रंग में रंग गया। वहीं देश के विभिन्न हिस्सों से आए श्रद्धालुओं ने भी भजन-कीर्तन कर अपनी श्रद्धा अर्पित की।

भंडारे का शुभारंभ, श्रद्धालुओं के साथ किया प्रसाद ग्रहण

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने धाम में संचालित भंडारे का रिबन काटकर शुभारंभ किया तथा श्रद्धालुओं के साथ प्रसाद ग्रहण किया। उन्होंने भंडारा संचालकों से संवाद कर व्यवस्थाओं की जानकारी ली और मानव सेवा ईश्वर सेवा उत्थान समिति द्वारा संचालित विशाल भंडारे की सराहना की।

इस अवसर पर जिलाधिकारी गौरव कुमार, पुलिस अधीक्षक सुरजीत सिंह पंवार, बीकेटीसी के सीईओ विशाल मिश्रा, उपाध्यक्ष ऋषि प्रसाद सती, रावल अमरनाथ नंबूदरी, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी गिरीश चौहान, मंदिर अधिकारी राजेंद्र चौहान, नायब रावल सूर्यराग नंबूदरी, धर्माधिकारी स्वयंबर सेमवाल, वेदपाठी रविंद्र भट्ट, आचार्य वाणी विलास डिमरी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

गंगोत्री यमुनोत्री धाम के कपाट...

माँ गंगा की उत्सव डोली के गंगोत्री धाम पहुंचने पर तीर्थ पुरोहितों ने विधिवत पूजा अर्चना,गंगा लहरी, गंगा सहस्त्रनाम का पाठ करने के बाद रीति-रिवाज और वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ 12 बजकर 15 मिनट पर गंगोत्री धाम के कपाट श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोल दिये गए।

गंगोत्री धाम कपाट उदघाटन के अवसर पर मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी गंगोत्री पहुंचे। जहां उन्होंने मां गंगा की पूजा अर्चना की,और अखंड ज्योति के दर्शन किए। वहीं कपाट खुलने के अवसर पर देश विदेश से आए श्रद्धालुओं ने भी अखंड ज्योति के दर्शन किए ओर गंगा में स्नान कर पुण्य अर्जित किया।

मुख्यमंत्री ने कहा आज हमारे लिए अत्यंत शुभ दिन है। अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर धाम के कपाट श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए हैं। चारधाम यात्रा में आने वाले तीर्थयात्रियों के भीतर विशेष उत्साह और उमंग देखने को मिल रहा है। यात्रा को लेकर श्रद्धालुओं में अलग ही जोश है। हमने सभी यात्रियों की सुविधा के लिए समुचित एवं बेहतर तैयारियां सुनिश्चित की है, ताकि सभी की यात्रा सुखद, सरल और सुरक्षित हो सके। हमारी कामना है कि यह यात्रा सभी के लिए मंगलमय हो और भगवान की कृपा सभी पर बनी रहे। उन्होंने कहा यात्रा को सुचारू,सुव्यवस्थित एवं सुरक्षित बनाए रखना हम सभी का सामूहिक प्रयास है। इस दिशा में सभी स्टेक होल्डर्स एवं चारधाम यात्रा से जुड़े हितधारकों ने पूरी तैयारी के साथ कार्य किया है। चारधाम यात्रा में आने वाले सभी श्रद्धालुओं का हार्दिक स्वागत है।

इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री प्रदीप बत्रा,डीएम प्रशान्त आर्य,एसपी कमलेश उपाध्याय, एडीएम मुक्ता मिश्र,दर्जा राज्य मंत्री प्रताप पंवार,विधायक सुरेश चौहान,पूर्व विधायक विजयपाल सजवाण,गढ़वाल कोर्डिनेटर किशोर भट्ट ,भाजपा जिलाध्यक्ष नागेंद्र चौहान,ब्लाक प्रमुख राजदीप परमार, ममता पंवार,मंदिर समिति के अध्यक्ष धर्मानंद सेमवाल,सचिव सुरेश सेमवाल सहित अन्य जनप्रतिनिधि ,अधिकारी एवं मंदिर समिति के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री धामी पहुंचे भारत के प्रथम सीमांत गांव माणा

चमोली। मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने बुधवार को भारत के प्रथम सीमांत गांव माणा पहुंचकर क्षेत्र का भ्रमण किया तथा वहां आए श्रद्धालुओं एवं स्थानीय जनता से आत्मीय संवाद किया। इस अवसर पर उन्होंने चारधाम यात्रा को सुरक्षित, सुखद एवं प्लास्टिक मुक्त हरित यात्रा बनाने की अपील करते हुए सभी से पर्यावरण संरक्षण में सहयोग देने का आग्रह किया। मुख्यमंत्री के आगमन पर माणा गांव की महिलाओं ने पारंपरिक मांगलगीत गाकर एवं स्थानीय उत्पाद भेंट कर उनका भव्य स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने इस आत्मीय स्वागत के लिए ग्रामीण महिलाओं का आभार व्यक्त किया और उनकी परंपराओं एवं संस्कृति की सराहना की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने गांव की शत-प्रतिशत "लखपति दीदियों" से मुलाकात कर उनके कार्यों की सराहना की। उन्होंने महिलाओं द्वारा तैयार किए जा रहे स्थानीय उत्पादों को गुणवत्तापूर्ण बताते हुए कहा कि ये उत्पाद न केवल स्थानीय आजीविका को सशक्त कर रहे हैं, बल्कि उत्तराखंड की पहचान को भी मजबूत कर रहे हैं। उन्होंने चारधाम यात्रा पर आने वाले श्रद्धालुओं से अपील की कि वे स्थानीय उत्पादों की खरीद कर क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में सीमांत गांवों के विकास को नई दिशा मिली है और जो गांव पहले "अंतिम गांव" कहे जाते थे, उन्हें अब "प्रथम गांव" की संज्ञा देकर उनके समग्र विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि वाइब्रेंट विलेज योजना के तहत उत्तराखंड के सीमांत गांवों में आधारभूत सुविधाओं का तेजी से विस्तार किया जा रहा है, जिससे इन क्षेत्रों में रोजगार, पर्यटन और आजीविका के नए अवसर सृजित हो रहे हैं। माणा गांव सहित अन्य सीमांत क्षेत्रों में हो रहे विकास कार्य प्रदेश के संतुलित और समावेशी विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि राज्य सरकार के निरंतर प्रयासों और केंद्र सरकार के सहयोग से सीमांत गांव विकास की नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेंगे और आत्मनिर्भर उत्तराखंड के निर्माण में अहम भूमिका निभाएंगे। ग्राम पंचायत माणा, विकासखण्ड ज्योतिर्मठ, जनपद चमोली, आज स्वयं सहायता समूहों और "लखपति दीदी" पहल के माध्यम से एक आदर्श मॉडल के रूप में उभर कर सामने आया है।

यहां कुल 12 स्वयं सहायता समूह सक्रिय हैं, जिनसे 82 महिलाएं जुड़ी हुई हैं। ग्राम में एक ग्राम संगठन "घुंघटी महिला ग्राम संगठन" तथा एक क्लस्टर स्तरीय संगठन "योगबंदी क्लस्टर स्तरीय संगठन" कार्यरत है।

ओम नमः शिवाय के उद्घोष के साथ तृतीय केदार तुंगनाथ के कपाट खुले

तुंगनाथ/उखीमठ/ रुद्रप्रयाग। भक्तिमय वातावरण और "नमः शिवाय" उदघोष के बीच पंचकेदारों में से 12073 फीट की ऊंचाई पर स्थित प्रसिद्ध तृतीय केदार तुंगनाथ मंदिर के कपाट विधि-विधान के साथ आज पूर्वाह्न 11 बजे श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोल दिए गए। कपाट खुलने के समय पांच सौ से अधिक श्रद्धालुजन मौजूद रहे। इस अवसर पर मंदिर को 5 क्विंटल से अधिक फूलों से सजाया गया था। मैठाणी पुजारियों द्वारा श्री बदरीनाथ केदारनाथ मंदिर समिति के अधिकारियों कर्मचारियों की उपस्थिति में विशेष पूजा-अर्चना, वैदिक मंत्रोच्चार और पारंपरिक अनुष्ठानों के बाद भगवान तुंगनाथ के स्वयंभू शिवलिंग को समाधि से श्रृंगार रूप दिया गया। दर्शन पूजा-अर्चना के बाद भगवान तुंगनाथ का जलाभिषेक किया गया। इसके बाद दर्शन शुरू हो गये। कपाट खुलने हेतु मंदिर परिसर को फूलों से भव्य रूप से सजाया गया था, कपाट खुलने के साथ ही श्रद्धालुओं ने भगवान शिव के दर्शन कर सुख-समृद्धि और कल्याण की कामनाएं की। इससे पहले भगवान तुंगनाथ जी की चलविग्रह डोली आज सुबह चोपता से श्री तुंगनाथ पहुची परिक्रमा के बाद डोली पार्वती मंदिर में विराजमान हुई। परंपरा के अनुसार स्वयंभू लिंग को पुष्प और अक्षत अर्पित कर जागृत कर श्रृंगार रूप दिया गया। इसके बाद श्रद्धालुओं ने दर्शन पूजा-अर्चना जलाभिषेक कर बाबा तुंगनाथ का आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर पूर्व विधायक मनोज रावत, जिला पंचायत सदस्य प्रीति पुष्पवाण, प्रबंधक बलबीर नेगी, बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे।

आरक्षण के मामले में भाजपा की नीयत साफ नहीं: गणेश गोदियाल

देहरादून। महिला आरक्षण के मुद्दे पर जनता को गुमराह किये जाने के खिलाफ आज प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री गणेश गोदियाल के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने विधानसभा भवन के सामने विशाल एक दिवसीय धरने के माध्यम से राज्य की भाजपा सरकार से उत्तराखंड विधानसभा में 33 प्रतिशत आरक्षण लागू किये जाने की मांग की।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत आज कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के साथ ही सैकडों की संख्या में एकत्र कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने विधानसभा भवन के सामने एक दिवसीय धरना देते हुए राज्य विधानसभा में 33 प्रतिशत महिला आरक्षण लागू किये जाने की मांग की। कार्यक्रम में पूर्व मुख्यमंत्री श्री हरीश रावत, प्रदेश चुनाव अभियान समिति के अध्यक्ष श्री प्रीतम सिंह, प्रदेश चुनाव प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष डॉ0 हरक सिंह रावत, राष्ट्रीय प्रवक्ता आलोक शर्मा, विधायक ममता राकेश, अनुपमा रावत, रवि बहादुर आदि ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम का संचालन महानगर अध्यक्ष डॉ0 जसविन्दर सिंह गोगी एवं ओम प्रकाश सती बब्बन ने संयुक्त रूप से किया।

कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री गणेश गोदियाल वर्ष 2023 में संसद के दोनों सदनों में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान किये जाने हेतु महिला आरक्षण विधेयक (''नारी शक्ति वंदन अधि नियम 2023'' विधेयक) पूर्ण बहुमत के साथ पारित किया गया था। परन्तु भाजपा ने राजनैतिक मजबूरी में पास किये गये विधेयक को लागू करने में आना-कानी शुरू कर दी तथा विध ेयक के प्रावधानों में निर्धारित तिथि तक आरक्षण लागू करने के बजाय बिना जनगणना के मनमाना परिसीमन विधेयक संसद में लाकर सदन को ही नहीं जनता विशेष रूप से मातृशक्ति को गुमराह करने का काम किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि यह भी सर्व विदित है कि पहली बार स्व0 राजीव गांधी जी स्थानीय निकायों में महिलाओं को आरक्षण देने सम्बन्धी विधेयक लाये थे जिसे स्व0 नरसिम्हाराव सरकार ने पारित किया आज उसी का नतीजा है कि देशभर के स्थानीय निकायों के माध्यम से देशभर के निकायों में 15 लाख चुनी हुई महिला प्रतिनिधि हैं। महिलाओं के लिए राजनीति में जिस आरक्षण की परिकल्पना स्व0 राजीव गांधी जी ने की थी नारी शक्ति वंदन बिल के रूप में कांग्रेस पार्टी ने उस बिल का स्वागत किया तथा उसे बहुमत के साथ दोनों सदनों में पास कराने में सरकार का सहयोग किया।

पूर्व मुख्यमंत्री श्री हरीश रावत ने कहा कि 2008 में डॉ0. मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली कांग्रेस पार्टी की सरकार ने महिला आरक्षण बिल को राज्यसभा में भारी बहुमत से पारित कर लोकसभा में रखने का प्रयास किया तब, वर्तमान में सत्ता रूढ़ भाजपा के सांसदों ने इसका घोर विरोध किया था, परन्तु राजनैतिक मजबूरी के चलते वर्ष 2023 में भाजपा को महिला आरक्षण बिल लाना पड़ा तथा देर आये दुरूस्त आये की तर्ज पर कांग्रेस पार्टी ने भाजपा सरकार के इस फैसले का स्वागत एवं समर्थन किया।

चुनाव अभियान समिति के अध्यक्ष प्रीतम सिंह ने कहा कि विधानसभा एवं लोकसभा में महिला आरक्षण बिल पारित होने के चार वर्ष बाद लागू होने की निश्चित तिथि 16 अप्रैल 2026 तक लागू न होने से देश की महिलायें अपने को उपेक्षित महसूस कर रही हैं और भाजपा के नेता एक सोची समझी चाल के साथ लगातार देश की जनता को गुमराह कर रहे हैं परन्तु अब देश की जनता भाजपा के झांसे में आने वाली नहीं है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी हमेशा महिलाओं को बराबर का अधिकार देने के पक्ष में रही है और इसी का परिणाम है कि राजीव गांध ी जी ने पंचायतों में महिलाओं के लिए आरक्षण का प्रावधान प्रस्तावित किया जिसे कांग्रेस की तत्कालीन नरसिंम्हा राव सरकार ने लागू भी किया इसके विपरीत भाजपा ने हमेशा महिला आरक्षण का विरोध किया।

डॉ0 हरक सिह ने अपने संबोधन में कहा कि देश की महिला शक्ति भाजपा को कभी माफ नहीं करेगी। उन्होंने कहा कि लम्बे इंतजार के बाद महिला आरक्षण अधिनियम 2023 के रूप में सदन पटल पर आया तथा कांग्रेस पार्टी सहित सभी विपक्षी दलों द्वारा महिला आरक्षण बिल का समर्थन करते हुए इसे पूर्ण बहुमत से पारित करवाया गया परन्तु भारतीय जनता पार्टी उसे लागू करने में आनाकानी कर ठंडे बस्ते में डालने का कुचक्र रच रही है।

रिक्रूट जवानों के बीच पहुँचे डीएम व एसपी

चमोली। पुलिस लाइन गोपेश्वर में चल रहे रिक्रूट आरक्षियों के एक माह के 'जेटीसी' (प्रारम्भिक परिचयात्मक प्रशिक्षण) के दौरान आज का दिन खासा उत्साहपूर्ण और प्रेरणादायक रहा। जिलाधि कारी चमोली गौरव कुमार व पुलिस अध ीक्षक चमोली सुरजीत सिंह पँवार ने

अचानक प्रशिक्षण स्थल पर पहुंचकर रिक्रूट आरक्षियों से सीधा संवाद किया और उनका मनोबल बढ़ाया। जिलाधि कारी ने कहा कि पुलिस बल जनता और प्रशासन के बीच सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है, इसलिए प्रत्येक जवान का व्यवहार संवेदनशील, संयमित एवं जनहितकारी होना चाहिए। उन्होंने रिक्रूट्स को टीम भावना के साथ कार्य करने, वरिष्ठों के अनुभवों से सीख लेने तथा हर परिस्थिति में सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने की प्रेरणा दी। प्रशिक्षण की बारीकियों का निरीक्षण करते हुए एसपी चमोली ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि पुलिस सेवा केवल एक नौकरी नहीं, बल्कि समाज के प्रति एक बड़ी जिम्मेदारी और सेवा का भाव है। उन्होंने कहा कि "प्रशिक्षण वह भट्टी है, जिसमें तपकर साधारण लोहा भी फौलाद बनता है।" उन्होंने रिक्रूट्स को सख्त लेकिन प्रेरणादायक संदेश देते हुए कहा कि वर्दी का खौफ आम जनता के लिए नहीं, बल्कि अपराधियों के लिए होना चाहिए। दबाव कितने भी आएं, आपकी ईमानदारी ही आपका सबसे बड़ा कवच है। उन्होंने अनुशासन, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और टीम भावना को एक सफल पुलिसकर्मी की पहचान बताते हुए कहा कि कठिन परिस्थितियों में भी संयम और साहस बनाए रखना ही एक सच्चे पुलिसकर्मी की सबसे बड़ी ताकत होती है।

एसपी चमोली ने बदलते समय के साथ पुलिसिंग के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए साइबर अपराधों के बढ़ते खतरे का जिक्र किया और जवानों को तकनीकी रूप से अपडेट रहने, नई चुनौतियों को समझने और आधुनिक पुलिसिंग अपनाने की नसीहत दी। संवाद के दौरान उन्होंने रिक्रूट आरक्षियों से उनके अनुभव, समस्याएं एवं प्रशिक्षण से जुड़े सुझाव भी जाने और उनके समाधान के लिए संबंधित अधि कारियों को आवश्यक निर्देश दिए। इस खुले संवाद ने रिक्रूट्स में आत्मविश्वास और जुड़ाव की भावना को और मजबूत किया।

राज्यपाल से की स्वयंसेवकों ने मुलाकात

देहरादून। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) से आज लोक भवन में राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) के स्वयंसेवकों ने मुलाकात की। इन स्वयंसेवकों जिन्हें माननीय राष्ट्रपति जी द्वारा सम्मानित किया गया है। स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर सेवा भाव के साथ एन.एस.एस.

ने 26 जनवरी, 2026 को नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर आयोजित गणतंत्र दिवस परेड में राज्य का प्रतिनिधित्व किया था। साथ ही उन स्वयंसेवकों ने भी भेंट की, से जुड़ना युवाओं के लिए गौरव और जिम्मेदारी दोनों का विषय है।

उन्होंने कहा कि गणतंत्र दिवस परेड जैसे वैश्विक महत्व के मंच पर उत्तराखण्ड का प्रतिनिधित्व करना अत्यंत सम्मानजनक उपलब्धि है, जिसे देश ही नहीं बल्कि विश्वभर में देखा जाता है। राज्यपाल ने राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त स्वयंसेवकों की भी सराहना करते हुए कहा कि यह सम्मान लाखों युवाओं में से चुनिंदा व्यक्तियों को ही प्राप्त होता है। उन्होंने इसे न केवल व्यक्तिगत सफलता, बल्कि उत्तराखण्ड राज्य के लिए गर्व का क्षण बताया। युवाओं को प्रेरित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि वे समाज में 'ब्रांड एंबेसडर' के रूप में अपनी भूमिका निभाएं। उन्होंने अपेक्षा जताई कि स्वयंसेवक एन. एस.एस. के मूल सिद्धांतों- सेवा, समर्पण और सामाजिक उत्तरदायित्व को समाज में पहुंचाने का कार्य करें तथा राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान दें। उन्होंने युवाओं से अपने लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहते हुए समाज में सकारात्मक परिवर्तन के प्रेरणास्रोत बनने का आह्वान किया।

इस अवसर पर विशेष प्रमुख सचिव श्री अमित सिन्हा, एन.एस.एस. के क्षेत्रीय निदेशक समरदीप सक्सेना, राज्य एन.एस.एस. अधिकारी सुनैना रावत आदि उपस्थित रहे।

श्रीमती प्रियंका जोशी ने ग्रहण किया जिला सूचना अधिकारी का पदभार

देहरादून। जनपद देहरादून में जिला सूचना अधिकारी के पद पर श्रीमती प्रियंका जोशी ने अपने स्थानांतरण के उपरांत विधिवत पदभार ग्रहण किया। इस अवसर पर जिला सूचना परिवार के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उनका स्वागत किया। पदभार ग्रहण के दौरान कार्यालय में एक संक्षिप्त स्वागत कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें कार्मिकों ने श्रीमती जोशी को पुष्पगुच्छ भेंट कर शुभकामनाएं व्यक्त कीं। सभी ने आशा व्यक्त की कि उनके नेतृत्व में विभागीय कार्यों को नई दिशा और गति मिलेगी। उन्होंने टीम वर्क को प्राथमिकता देते हुए जनसंपर्क गतिविधि यों को और अधिक प्रभावी बनाने पर बल दिया।

सम्पादकीय

राजनीति में अमर्यादित होती भाषा

हाल ही में मल्लिकार्जुन खरगे द्वारा पीएम नरेन्द्र मोदी पर की गई टिप्पणी ने एक बार फिर इस बहस को तेज कर दिया है कि क्या भारतीय राजनीति में संवाद का स्तर नीचे गिर रहा है। हालांकि यह पहली बार नहीं है। सत्ता पक्ष हो या विपक्ष, पिछले कुछ सालों में कई बार भाषा का स्तर इतना गिरा हुआ था की राजनीतिक संस्कृति, लोकतांत्रिक मूल्य और सामाजिक नैतिकता के कोई मायने नहीं रह जाते हैं। ऐसा लगता है कि अब राजनीति वो राजनीति नहीं रही, जहां विरोध का एक दायरा होता था, बयानों में मर्यादा होती थी, शब्दों में गरिमा होती थी, व्यक्तित्व में नैतिकता होती थी, एक संतुलन होता था, एक संयम होता था और वो संयम ही एक नेता को नेता बनता था। अब राजनीतिक विरोध एक व्यक्तिगत कुंठा सा लगता है। सहनशीलता खत्म होने लगी है।

कांग्रेस और भाजपा दोनों में वैचारिक संघर्ष कोई नई बात नहीं है। दोनों ही पार्टियों सत्ता की धूरी रहे हैं और जब सत्ता जाने वाली होती है या जा चुकी होती है तो राजनीतिक हताशा शब्दों में भी दिखाई देती थी और चेहरे पर भी दिखाई देती है। ऐसे बहुत सारे उदाहरण है जो पूर्व पीएम मनमोहन सिंह के लिए, पीएम नरेंद्र मोदी के लिए, सोनिया गांधी के लिए, ममता बनर्जी के लिए, राहुल गांधी के लिए और भी कई बड़े नेताओं के लिए अपशब्द और अमर्यादित शब्द बोले गए। हम उन शब्दों की गहराई में नहीं जाना चाहते हैं, हम उन शब्दों को दोहराना भी नहीं चाहते हैं। सवाल उन शब्दों का नहीं है। सवाल आलोचनाओं की एक सीमा का है।

लोकतंत्र में आलोचना का स्थान बहुत महत्वपूर्ण और आवश्यक है। विपक्ष का काम ही है कि वो सरकार की नीतियों, निर्णयों और कार्यप्रणाली पर सवाल उठाती रहे। ये सवाल ही जवाबदेही सुनिश्चित करते हैं। ये सवाल ही शासन प्रणाली को पारदर्शी बनाते हैं लेकिन जब आलोचना की सीमा पार होकर व्यक्तिगत कटाक्ष में बदल जाती है, तो राजनीतिक संवेदनशीलता ही नहीं लोकतंत्र का भी मूल्य गिरता है। ऐसा नहीं की राजनीतिक परिदृश्य हाल ही में जटिल और संवेदनशील हुए हैं। हर दौर में अपनी-अपनी राजनीतिक मुश्किलें थी, अपने-अपने राजनीतिक हालात थे मगर इतना संयम तो होता था कि विरोध करने के बाद एक दूसरे से नजर मिल सके। यही तो हमारी सभ्यता है, यही तो हमारी संस्कृति है, यही तो हमारा परिचय है। पूरब पश्चिम का वो गीत याद आता है, जब कहते हैं कि, जीते हो किसी ने देश तो क्या, हमनें तो दिलों को जीता है, जहां राम अभी तक हैं नर में नारी में अभी तक सीता हैं। अब हमारे भीतर कितने प्रतिशत राम बचे हैं यह मंथन तो हमें करना होगा। हमें यह मंथन भी करना होगा कि जिस सभ्यता और संस्कृति को हमनें अब तक संजो कर रखा है वो कुछ सालों में कैसे खत्म हो जाएगी।

आज भारत एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहां वैश्विक मंच पर अपनी पहचान भी मजबूत करनी है और घरेलू स्तर पर विकास और सामाजिक समरसता को भी बनाए रखना है। ऐसे समय में राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका कितनी जिम्मेदार होनी चाहिए यह बहुत महत्वपूर्ण है। यह आत्म मंथन का समय है। हमें विरोध का एक दायरा तय करना होगा। हमें समझना होगा कि लोकतंत्र केवल संस्थाओं और चुनावों से नहीं चलता है, बल्कि यह हमारे संवाद की गुणवत्ता पर भी निर्भर करता है। यदि संवाद गरिमापूर्ण और संतुलित होगा, तो जाहिर है कि लोकतंत्र मजबूत होगा। यदि संवाद ही व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप और कटुता में बदल जाएगा, तो लोकतंत्र का कमजोर होना स्वाभाविक है। यह हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम दुनिया के सबसे स्वस्थ और बड़े लोकतांत्रिक देश में न सिर्फ लोकतंत्र की रक्षा के लिए काम करें बल्कि हमारे कार्यशैली ऐसी हो जो पूरी दुनिया के लिए मिसाल बने।

मौ. वसी जैदी

सम्पादक

भारत में जून 1927 में हुई थी रेडियो प्रसारण की शुरुआत

देहरादून। आकाशवाणी भारत के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन संचालित सार्वजनिक क्षेत्र की रेडियो प्रसारण सेवा है। भारत में रेडियो प्रसारण की शुरुआत मुम्बई और कोलकाता में सन 1927 में दो निजी ट्रांसमीटरों से हुई। 1930 में इसका राष्ट्रीयकरण हुआ और तब इसका नाम भारतीय प्रसारण सेवा (इण्डियन ब्राडकास्टिंग कॉरपोरेशन) रखा गया। बाद में 1957 में इसका नाम बदल कर आकाशवाणी रखा गया। बॉम्बे प्रेसिडेंसी रेडियो क्लब और अन्य रेडियो क्लबों के कार्यक्रमों के साथ ब्रिटिश राज के दौरान जून 1923 में प्रसारण आरम्भ हुआ। 23 जुलाई 1927 को एक समझौते के अनुसार, प्राइवेट इण्डियन ब्रॉडकास्टिंग कम्पनी लिमिटेड को दो रेडियो स्टेशन संचालित करने के लिए अधिकृत किया गया था: बॉम्बे स्टेशन जो 23 जुलाई 1927 को आरम्भ हुआ था, और कलकत्ता स्टेशन जो 26 अगस्त 1927 को आरम्भ हुआ था। कम्पनी चली गई। 1 मार्च 1930 को परिसमापन में सरकार ने प्रसारण सुविधाओं को संभाला और 1 अप्रैल 1930 को दो वर्ष के लिए प्रायोगिक आधार पर भारतीय स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस की शुरुआत की और मई 1932 में स्थायी रूप से ऑल इण्डिया रेडियो बन गया।

आकाशवाणी भारत का राष्ट्रीय सार्वजनिक रेडियो प्रसारक है, जिसकी शुरुआत 1927 में निजी रेडियो केंद्रों के रूप में हुई थी। 1930 में सरकारी अधिग्रहण के बाद, 8 जून 1936 को इसका नाम श्ऑल इंडिया रेडियोश पड़ा और 1957 में आधिकारिक रूप से ''आकाशवाणी'' कहा जाने लगा। यह दुनिया के सबसे बड़े रेडियो नेटवर्क में से एक है, जो श्बहुजन हिताय: बहुजन सुखायश के सिद्धांत पर काम करता है। भारत में रेडियो प्रसारण की शुरुआत जून 1927 में मुंबई और कोलकाता में दो निजी ट्रांसमीटरों के साथ हुई थी। निजी कंपनी के बंद होने के बाद, सरकार ने इसका अधिग्रहण कर लिया और इसे श्इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विसश नाम दिया। 8 जून 1936 को इसे श्ऑल इंडिया रेडियोश (AIR) नाम दिया गया। इसी वर्ष 19 जनवरी को दिल्ली स्टेशन से पहला समाचार बुलेटिन प्रसारित हुआ। 1947 में स्वतंत्रता के समय, AIR के पास 6 स्टेशन थे। 1956 में, मैसूर के प्रोफेसर एम.वी. गोपालस्वामी द्वारा गढ़े गए शब्द ''आकाशवाणी'' को आधिकारिक रूप से अपनाया गया। लोकप्रिय रेडियो सेवा ''विविध भारती'' की शुरुआत 1957 में हुई थी। आज आकाशवाणी 500 से अधिक केंद्रों के साथ 23 भाषाओं और 146 बोलियों में कार्यक्रम प्रसारित करता है, जो भारत की 98% से अधिक आबादी तक पहुँचता है। दक्षिण भारत में ब्रॉडकास्टिंग की नींव. ..मद्रास रेडियो क्लब, 1924 रेडियो की गूंज जल्द ही भारत के अलग-अलग हिस्सों में फैलने लगी थी। 31 जुलाई 1924 में सी. वी. कृष्णमूर्ति चेट्टी द्वारा स्थापित Madras Presidency Radio Club से दक्षिण भारत में प्रसारण की दिशा में एक महत्वपूर्ण अध्याय की शुरुआत हुई और इंग्लैंड से लाये गए रेडियो उपकरण ने इस पहल को साकार किया। शुरुआत में 40 वॉट के ट्रांसमीटर से प्रसारण किया गया, जिसे बाद में 200 वॉट के अधिक शक्तिशाली ट्रांसमीटर से बदल दिया गया। हर शाम लगभग ढाई घंटे तक संगीत और वार्ताओं का प्रसारण किया जाता था, जो उस समय के श्रोताओं के लिए एक नया और अनोखा अनुभव था। इसी पहल ने दक्षिण भारत में ब्रॉडकास्टिंग की नींव रखी। हालांकि, आर्थिक कठिनाइयों के कारण 1927 में इस सेवा को बंद करना पड़ा।

राजधानी दिल्ली में रेडियो प्रसारण की शुरुआत साल 1936 में भारतीय प्रसारण ने एक और महत्वपूर्ण पड़ाव हासिल किया, जब देश की राजधानी दिल्ली में रेडियो प्रसारण की शुरुआत हुई। 1 जनवरी 1936 को Indian State Broadcasting Service का दिल्ली केंद्र आधिकारिक रूप से ऑन-एयर हुआ। पहले यह केंद्र 18 अलीपुर रोड, दिल्ली स्थित अस्थायी स्टूडियो से संचालित किया जाता था, जबकि इसका 20 किलोवॉट मीडियम वेव ट्रांसमीटर मॉल रोड पर स्थापित था। दिल्ली केंद्र की शुरुआत के साथ ही रेडियो प्रसारण को एक नई दिशा मिली। कला, शिक्षा और संगीत जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बढ़ावा मिला, जिससे रेडियो केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहा, बल्कि समाज के बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास का भी एक सशक्त साधन बन गया। इसी दौर में समाचार सेवा और अनुसंधान विभागों की भी स्थापना की गई, जिसने प्रसारण को और अधिक संगठित और प्रभावी बनाया। धीरे-धीरे, रेडियो एक नए रूप में उभरने लगा, नजरिया बदलने लगा और एक ऐसे माध्यम के रूप में विकसित होने लगा जो देश को शिक्षा, संस्कृति, खबरों और कई जानकारियों से जोड़ता है।

1930 के दशक में, भारत में रेडियो का विस्तार नए-नए रूप लेने लगा था। इसी दौर में, 10 सितंबर 1935 को मैसूर में एक अनोखी पहल हुई, जब 'आकाशवाणी' नाम से एक निजी रेडियो स्टेशन की शुरुआत हुई, जो भारत का पहला निजी प्रसारण केंद्र बना। मनोविज्ञान के प्रोफेसर डॉ. एम. वी. गोपालस्वामी ने अपने घर से मात्र 30 वॉट के ट्रांसमीटर के साथ इस प्रसारण की शुरुआत की। बाद में इसे और अधिक शक्तिशाली ट्रांसमीटर से सुसज्जित किया गया। यह पहल किसी सरकारी योजना का हिस्सा नहीं थी, बल्कि एक व्यक्ति के जुनून और समाज के सहयोग का परिणाम था, जिसने रेडियो को लोगों के और करीब ला दिया। 'आकाशवाणी', यानी आकाश से आने वाली आवाज, यह नाम भी यहीं से लोकप्रिय हुआ, जिसने आगे चलकर पूरे देश में रेडियो की पहचान बनायी । समय के साथ, इस सेवा को मैसूर राज्य ने अपने अधीन ले लिया और बाद में यह आकाशवाणी का हिस्सा बन गई।

साल 1936 में भारत में रेडियो ने एक नई भूमिका निभानी शुरू की, जब पहली बार श्रोताओं तक समाचार पहुँचने लगे। 19 जनवरी 1936 को दिल्ली केंद्र से पहला समाचार बुलेटिन प्रसारित किया गया। यह प्रसारण Indian State Broadcasting Service के अंतर्गत शुरू हुआ, जिसने भारत में रेडियो समाचार सेवा की नींव रखी। यह बुलेटिन अंग्रेजी और 'हिंदुस्तानी', दोनों भाषाओं में प्रस्तुत किया गया, जिससे यह अधिक व्यापक श्रोताओं तक पहुंच सका।

इसके साथ ही, समसामयिक विषयों पर वार्ताओं की भी शुरुआत हुई, जिसने रेडियो को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सूचना और विचार-विमर्श का एक सशक्त मंच बना दिया। यही वह दौर था, जब रेडियो ने देश को जोड़ने के साथ-साथ, उसे जागरूक और सूचित करने की जिम्मेदारी भी निभानी शुरू की।

विकास का धामी मॉडल : मियावाला में तालाब बना खूबसूरत पार्क, लोगों को मिली नई सैर की जगह

देहरारदून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के दिशा-निर्देशों में मसूरी-देहरादून विकास प्राधिकरण (एमडीडीए) जनहित से जुड़ी योजनाओं को तेजी से धरातल पर उतार रहा है। खास तौर पर शहर के पुराने प्राकृतिक तालाबों, जल स्रोतों और पार्कों के संरक्षण व सौंदर्यीकरण की दिशा में प्राधिकरण की पहल अब साफ तौर पर नजर आने लगी है। इसी कड़ी में देहरादून के मियावाला क्षेत्र में एक पुराने प्राकृतिक तालाब को विकसित कर लगभग 3.30 करोड़ रुपये की लागत से आधुनिक सुविधाओं से युक्त आकर्षक तालाब तथा पार्क के रूप में तैयार किया गया है, जो पर्यावरण संरक्षण और जनसुविधा का बेहतरीन उदाहरण बनकर उभरा है।

मियावाला पंचायत घर गन्ना सेंटर के समीप जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पड़े पुराने प्राकृतिक तालाब के कायाकल्प के बाद तैयार इस पार्क का लोकार्पण आज रायपुर विधायक उमेश शर्मा काऊ ने किया। इस

अवसर पर स्थानीय पार्षद, गणमान्य नागरिक और बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी मौजूद रहे। कार्यक्रम में एमडीडीए के प्रभारी अधीक्षण अभियंता अतुल गुप्ता सहित हॉर्टिकल्चर अनुभाग के अधिकारी-कर्मचारी भी उपस्थित रहे। सभी ने लगभग 3.30 करोड़ रुपये की लागत से विकसित इस परियोजना को क्षेत्र के विकास और पर्यावरण एवं जल संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया और प्राधिकरण की कार्यशैली की सराहना की। तेजी से शहरीकरण के दौर में जहां प्राकृतिक जल स्रोत और हरित क्षेत्र लगातार सिमटते जा रहे हैं, वहीं एमडीडीए द्वारा इन संसाधनों के संरक्षण और पुनर्जीवन की दिशा में ठोस कदम उठाए जा रहे हैं।

पार्क में आधुनिक सुविधाओं का समावेश

नए विकसित पार्क में आमजन की सुविधा के लिए कई आधुनिक व्यवस्थाएं की गई हैं। पार्क का मुख्य द्वार उत्तराखंड की पारंपरिक पहाड़ी शैली में बनाया गया है, जो स्थानीय संस्कृति की झलक प्रस्तुत करता है। इसके अलावा पार्क में योग डेक, योग से संबंधित मूर्तिकला, कैन्टीन, स्वच्छ शौचालय, सुरक्षा के लिए रेलिंग, आकर्षक गजीबो, व्यवस्थित वॉकिंग ट्रैक, गार्डन बेंच और हरियाली से भरपूर खुले क्षेत्र विकसित किए गए हैं।

शहर की सुंदरता और हरियाली को मिलेगा बढ़ावा

एमडीडीए द्वारा इस तरह की परियोजनाएं न केवल शहर की सुंदरता को बढ़ा रही हैं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी अहम भूमिका निभा रही हैं। जलाशयों के संरक्षण से भूजल स्तर बनाए रखने में मदद मिलेगी, वहीं हरित क्षेत्रों के विस्तार से प्रदूषण नियंत्रण में भी सहायता मिलेगी। प्राधिकरण का कहना है कि इसी तर्ज पर अन्य स्थानों पर भी पार्कों और जल स्रोतों का जीर्णोद्धार किया जा रहा है, जिससे देहरादून को एक स्वच्छ, हरित और सुव्यवस्थित शहर के रूप में विकसित किया जा सके। मियावाला में विकसित यह पार्क न केवल एक विकास परियोजना है, बल्कि यह संदेश भी देता है कि यदि योजनाओं को सही दिशा और दृष्टि के साथ लागू किया जाए, तो विकास और पर्यावरण संरक्षण साथ-साथ चल सकते हैं। एमडीडीए की यह पहल देहरादून के लिए एक मॉडल बन सकती है, जिसे आने वाले समय में अन्य शहरों में भी अपनाया जा सकता है।

प्राकृतिक धरोहरों को नया जीवन देने की पहल- उमेश शर्मा काऊ

रायपुर विधायक उमेश शर्मा काऊ ने मियावाला में विकसित किए गए इस पार्क का लोकार्पण करते हुए एमडीडीए की कार्यशैली की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्राधिकरण ने जिस संवेदनशीलता और दूरदृष्टि के साथ प्राकृतिक तालाब को संरक्षित करते हुए उसे जनसुविधा से जोड़ने का कार्य किया है, वह सराहनीय है। उन्होंने कहा कि यह परियोजना केवल एक पार्क नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और जनहित के बीच संतुलन का उत्कृष्ट उदाहरण है। काऊ ने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में राज्य में विकास कार्यों को नई दिशा मिल रही है और एमडीडीए उसी सोच को जमीन पर उतार रहा है। उन्होंने उम्मीद जताई कि भविष्य में भी इसी तरह की योजनाएं अन्य क्षेत्रों में लागू होंगी, जिससे लोगों को बेहतर जीवन स्तर और स्वच्छ वातावरण मिल सकेगा।

पुराने जल स्रोत को मिला नया जीवन- बंशीधर तिवारी

एमडीडीए के उपाध्यक्ष बंशीधर तिवारी ने कहा कि प्राधिकरण का उद्देश्य केवल निर्माण कार्य करना नहीं, बल्कि पर्यावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए विकास को आगे बढ़ाना है। उन्होंने बताया कि मियावाला परियोजना इसी सोच का परिणाम है, जहां एक पुराने जल स्रोत को संरक्षित करते हुए उसे आधुनिक सुविधाओं से जोड़ा गया है। एमडीडीए के उपाध्यक्ष बंशीधर तिवारी ने कहा कि प्राधिकरण क्षेत्र में ऐसे कई अन्य स्थलों की पहचान की गई है, जहां इसी तरह के कार्य किए जाएंगे। उनका कहना है कि इन परियोजनाओं से शहर की सुंदरता के साथ-साथ पर्यावरणीय संतुलन भी मजबूत होगा।

प्रकृति और विकास का संगम- मोहन सिंह बर्निया

एमडीडीए के सचिव मोहन सिंह बर्निया ने कहा कि प्राधिकरण द्वारा सभी परियोजनाओं में गुणवत्ता और पारदर्शिता का विशेष ध्यान रखा जा रहा है। उन्होंने बताया कि मियावाला पार्क का निर्माण निर्धारित समयसीमा और मानकों के अनुरूप पूरा किया गया है। एमडीडीए के सचिव मोहन सिंह बर्निया ने कहा कि भविष्य में भी जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस तरह की योजनाओं को आगे बढ़ाया जाएगा, ताकि शहरवासियों को बेहतर सुविधाएं मिल सकें और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके।

जिलाधियारी ने की जनपद में अभिनव पहल

मिनी सचिवालयों में ग्राम प्रधानों द्वारा सुनी जाएगी क्षेत्रीय जनता की समस्याएं

हरिद्वार। जनपदवासियों की समस्याओं का त्वरित निराकरण करने के उद्देश्य से जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने जनपद में एक अभिनव पहल शुरू की गई है जिसमें ग्राम पंचायतों में बने मिनी सचिवालयों में ग्राम प्रधानों के माध्यम से क्षेत्रीय जनता की समस्याओं का निराकरण किया जायेगा,जिसका शुभारंभ आज वर्चुअल माध्यम से मुख्य विकास अधिकारी डॉ ललित नारायण मिश्र द्वारा किया गया। मुख्य विकास अधिकारी ने अवगत कराया है कि उत्तराखंड राज्य के 25 वे रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में जनपद में जो पंचायत भवन जीर्णशीर्ण हो गए थे,उनका पंचायती राज विभाग द्वारा जीर्णोद्धार किया गया,जिसमें सभी ब्लॉकों के 25 पंचायत भवनों को सुशोजित करते हुए मिनी सचिवालय नाम रखा गया है।उन्होंने अवगत कराया है कि जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने अभिनव पहल की गई है,जिसमें तैयार किए गए मिनी सचिवालयों में क्षेत्रीय जनता की समस्या ग्राम प्रधान द्वारा सुनी जाएगी तथा प्रत्येक सोमवार को जिलाधिकारी की अध्यक्षता में आयोजित हो रहे जन सुनवाई कार्यक्रम को मिनी सचिवालयों से भी वर्चुअल माध्यम से जोड़ा जायेगा तथा क्षेत्रीय जनता की समस्याओं का मौके पर ही निस्तारण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जिला स्तर की समस्याओं का व्हाट्सएप के माध्यम से आवेदन पत्र उपलब्ध कराया जायेंगे, जिसका जिले स्तर से निस्तारण किया जाएगा।उन्होंने कहा कि यह देश का पहला जनपद है, जहां इस तरह की पहल की गई है तथा जिसका शुभारंभ आज वर्चुअल माध्यम से किया गया है।उन्होंने अवगत कराया है कि क्षेत्रीय जनता को अपनी समस्याओं को लेकर जिला मुख्यालय नहीं आना पड़ेगा। रजत जयंती के अवसर पर तैयार किए गए मिनी सचिवालय कुल 25 जिसमें बहादराबाद ब्लॉक में 08, भगवानपुर में 03,रुड़की में 05,नारसन में 05 एवं लक्सर में 03,खानपुर में 01 मिनी सचिवालय तैयार किया गया है, जहां प्रत्येक सोमवार को ग्राम प्रधान द्वारा ग्रामीणों की समस्या सुनी जाएगी।

जनपदवासियों की समस्याओं का त्वरित निराकरण करने के उद्देश्य से जिलाधिकारी मयूर दीक्षित के निर्देशन में मुख्य विकास अधिकारी डॉ ललित नारायण मिश्र की अध्यक्षता में जिला कार्यालय सभागार में जन सुनवाई कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न विभागों से संबंधित 42 शिकायते/ समस्याएं दर्ज कराई गई जिसमें से 21 समस्याओं का मौके पर निराकरण किया गया शेष समस्याओं को निस्तारण हेतु संबंधित विभागों को प्रेषित किया गया। जनसुनवाई कार्यक्रम में राजस्व, भूमि, विवाद, एलपीजी गैस सिलेंडर, अतिक्रमण आदि से संबंधित समस्या दर्ज कराई गई। जनसुनवाई कार्यक्रम में शिकायतकर्ता समस्त कॉलोनीवासी विष्णु विहार निकट अल्पस कॉलोनी ने विष्णु विहार कॉलोनी में अभी तक विद्युत कनेक्शन नहीं हुआ है,जिस कारण समस्त कालोनी के लोगों को बहुत ही परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, कॉलोनी के वासियों ने जल्द से जल्द विद्युत कनेक्शन कराने के लेकर प्रार्थना पत्र दिए। प्रार्थी मुनीश निवासी सोहलपुर, सिकरोढ़ा ने अवगत कराया है कि उनके पिता यामिन 04 मार्च 2026 को लापता हो गए थे,उनकी गुमशुदगी की शिकायत पिरान कलियर थाने में दर्ज कराई थी।

काशीपुर में तकनीकी शिक्षा विभाग के रोजगार मेले का करेंगे शुभारम्भ

देहरादून। सूबे के कैबिनेट मंत्री डॉ धन सिंह रावत आगामी 23 से 25 अप्रैल तक प्रदेश भ्रमण पर रहेंगे। अपने तीन दिवसीय भ्रमण के दौरान डॉ. रावत अपने विध से पहले कैबिनेट मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने बताया कि वह 23 से 25 अप्रैल तक प्रदेश भ्रमण पर रहेंगे। जिसकी शुरूआत वह अपने विधानसभा क्षेत्र श्रीनगर से

ानसभा क्षेत्र श्रीनगर के साथ ही नैनीताल जनपद में विभिन्न विकास कार्यों के शिलान्यास व लोकार्पण करेंगे। इस दौरान डॉ. रावत स्वतंत्रता सेनानी व पेशावर कांड के नायक वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली के पैतृक गांव पीठसैण में पेशावर कांड की स्मृति में आयोजित क्रांति दिवस मेले में प्रतिभाग करेंगे जबकि काशीपुर में तकनीकी शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित रोजगार मेले का शुभारम्भ करेंगे। भ्रमण के दौरान डॉ. रावत अपने विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न दो दर्जन गांवों में जनसम्पर्क कर आम लोगों की समस्याओं को भी सुनेंगे। गढ़वाल व कुमाऊं भ्रमण पर जाने जनसम्पर्क अभियान के जरिये करेंगे। उन्होंने बताया कि 23 अप्रैल गुरूवार को वह क्षेत्र के चौरीखाल, कपरोली, नैणी, कैन्यूर, बग्वाड़ी, ब्यासी, रणगांव, मासौं, जगतपुरी, पापतोली, भरनौं, उफरैंखाल तथा डुमलोट में वृहद स्तर पर जनसम्पर्क कर आम लोगों से सीधे संवाद स्थापित कर उनकी समस्यओं को सुनेगे। इसके अलावा डॉ. रावत महान स्वतंत्रता सेनानी व पेशावर कांड के नायक वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली के पैतृक गांव जायेंगे, जहां वह पेशावर कांड की स्मृति में आयोजित क्रांति दिवस मेले में बतौर मुख्य अतिथि प्रतिभाग करेंगे। इसके उपरांत वह बांकूड़ा में श्री भैरवनाथ स्वामी की मूर्ति स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। इसके अलावा पीठसैंण में नव निर्मित सुभाष चन्द्र बोस आवासीय परिसर एवं विभिन्न विद्यालयों का औचक निरीक्षण करेंगे। शुक्रवार को डॉ. रावत मेलधार में स्थानीय लोगों व ग्रामीणों के साथ बैठक कर विभिन्न विकास योजनाओं व अन्य स्थानीय मुद्दों पर चर्चा करेंगे। इसके साथ ही वह चोपताखाल में राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में हाईब्रिड क्लासरूम तथा प्राथमिक विद्यालय में चाहरदीवारी व सौन्दर्यीकरण कार्यों का लोकार्पण करेंगे। इसके अलावा चौखाल में राजकीय प्राथमिक विद्यालय चौखाल, गुरफली, डुलमोट, खैतोली तथा राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय डुलमोट के नव निर्मित कक्षा-कक्षों, चाहरदीवारी, प्रयोगशाला एवं सौन्दर्यीकरण कार्यों का लोकार्पण के साथ ही कम्प्यूटर लैब का भी शिलान्यास करेंगे। इसके अलावा वह चोपताखाल, सिमखेत, बुड़ाकोट, मासौं तथा कनैरा गांव में जनसम्पर्क करेंगे। अपने भ्रमण के दौरान डॉ. रावत सहकारी समिति गुरूफली की वार्षिक आम बैठक में प्रतिभाग करेंगे साथ ही उप स्वास्थ्य केन्द्र भगवतीतैल्या का निरीक्षण कर स्वास्थ्य सुविधाओं के बारे में जानकारी लेंगे। शनिवार को डॉ. रावत रामनगर (नैनीताल) में राजकीय बालिका इंटर कॉलेज में नव निर्मित नेताजी सुभाष चन्द्र बोस छात्रावास कका लोकार्पण करेंगे, इसके उपरांत वह काशीपुर में तकनीकी शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित रोजगार मेले का शुभारम्भ करेंगे। मेले में कुमांऊं मण्डल के पॉलीटेक्निक कॉलेजों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को प्रतिष्ठित विभिन्न बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में कैम्पस प्लेसमेंट दिया जायेगा।

देवभूमि उत्तराखण्ड आगमन पर उपराष्ट्रपति का स्वागत

देहरादून। उपराष्ट्रपति श्री सी.पी. राधाकृष्णन के देवभूमि उत्तराखण्ड आगमन पर जौलीग्रांट एयरपोर्ट पर राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि), मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी और मंत्रीगणों ने उनका स्वागत किया।

कैबिनेट मंत्री सुबोध उनियाल ने किया 'सेहत के प्रहरियों' को सम्मानित

देहरादून. उत्तराखंड राज्य के कैबिनेट मंत्री सुबोध उनियाल ने आज राजधानी देहरादून मे आयोजित श्आभार समर्पणश कार्यक्रम में सम्मिलित होकर श्सेहत के प्रहरियोंश को सम्मानित किया।

समाज को स्वस्थ और सुरक्षित रखने में हमारे डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मियों का योगदान अतुलनीय है।

मैं निरंतर अपने स्वास्थ्य कर्मियों से आग्रह करता हूँ कि जब भी कोई व्यक्ति आपके पास आता है, तो वह अपने जीवन की रक्षा की आशा लेकर आता है। इसलिए हमें ऐसा कार्य-संस्कृति विकसित करनी है, जिसमें कर्तव्य का पालन सर्वोपरि हो, संवेदनशीलता बनी रहे और हर मरीज को सम्मान व समर्पण के साथ उपचार मिले।

मैं उन सभी डॉक्टरों एवं स्वास्थ्य कर्मियों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

जो निस्वार्थ भाव से मानव सेवा में निरंतर समर्पित हैं और अपने अथक प्रयासों से समाज को सुरक्षित एवं स्वस्थ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

संयुक्त निदेशक के एस चौहान ने सीएम को भेंट की पहलगाम पुस्तक

देहरादून। पहलगाम में पर्यटकों पर बर्बर हमले की पहली बरसी पर श्पहलगाम ... जब समय थम गयाश पुस्तक जनता के बीच आ गई. पुस्तक के लेखक सूचना एवं जनसंपर्क विभाग में संयुक्त निदेशक के एस चौहान ने बुधवार को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से मुलाकात कर पुस्तक की प्रति उन्हें भेंट की. पहलगाम में पर्यटकों पर बर्बर हमले की पहली बरसी पर बुधवार को 'पहलगाम ङ्घ जब समय थम गया' पुस्तक जनता के बीच आ गई. पुस्तक के लेखक सूचना एवं जनसंपर्क विभाग में संयुक्त निदेशक के एस चौहान हैं. जो घटना के दिन सपरिवार पहलगाम में मौजूद थे, उन्होंने अपने अनुभवों को पुस्तक की शक्ल दी है. चौहान ने बुधवार को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से मुलाकात कर पुस्तक की प्रति उन्हें भेंट की. उन्होंने बताया कि पुस्तक में पहलगाम में 22 अप्रैल 2025 को घटना वाले दिन के माहौल और तमाम सारी बातों को शामिल किया गया. इसके अंत में ऑपरेशन सिंदूर का भी जिक्र किया गया है.

हिंदी फिल्मों में तो अंजला को सपोर्टिंग कैरेक्टर्स भी अच्छे ना मिल सके

नई दिल्ली। विनोद खन्ना जब अपने बेटे अक्षय खन्ना को फिल्म इंडस्ट्री में लॉन्च करने के लिए हिमालय पुत्र फिल्म बना रहे थे तो उन्हें अक्षय के लिए हीरोइन तलाश करने में कड़ी मेहनत करनी पड़ी थी। उस रोल के लिए कोई परफेक्ट लड़की उन्हें नहीं मिल पा रही थी।

विनोद खन्ना की तलाश पूरी हुई अंजला जवेरी पर, जो उन दिनों लंदन में थी। अंजला जवेरी का जन्म और परवरिश लंदन में रहने वाले एक गुजराती परिवार में हुई थी। 16 नवंबर 1972 को अंजला का जन्म हुआ था। कुछ वेबसाइट्स दावा करती हैं कि अंजला का जन्म 20 अप्रैल को हुआ था। लेकिन ये सच नहीं है।

अंजला को बचपन से ही हिंदी फिल्में बहुत पसंद थी। लंदन में मौजूद एक पाकिस्तानी दुकान से वो भारतीय फिल्मों की वीडियो कैसेट्स खरीदा करती थी। अंजला भले ही लंदन में जन्मी व पली-बढ़ी हो। लेकिन उनके पिता ने उन्हें भारतीय संस्कृति से कभी दूर नहीं होने दिया। अक्सर पिता के साथ वो भारत आया भी करती थी।

एक दिन विनोद खन्ना ने जीटीवी और सनराइज रेडियो पर लंदन में अनाउंस कराया कि वो एक हीरोइन की तलाश करने इंग्लैंड आ रहे हैं। अंजना को भी उस अनाउंसमेंट का पता चला। उन दिनों वैसे भी अंजला मॉडलिंग करने के ख्वाब देखा करती थी।

लेकिन वो जानती थी कि उनकी हाइट काफी कम है। उन्हें मॉडलिंग की दुनिया में कामयाबी नहीं मिल सकेगी। अंजला ने अपना एक फोटोशूट कराया था। जब उन्हें पता चला कि विनोद खन्ना इंग्लैंड आ चुके हैं तो अंजला ने अपनी वो तस्वीरें ऑडिशन के लिए सब्मिट कर दी।

हालांकि उन्हें उम्मीद नहीं थी कि उन्हें ऑडिशन के लिए बुलाया भी जाएगा। लेकिन उन्हें बुलाया गया। और उनका ऑडिशन भी लिया गया। ऑडिशन देने और भी कई लड़कियां आई थी।

अंजला को जरा भी उम्मीद नहीं थी कि उनका सिलेक्शन होगा। पर किस्मत तो उन पर मेहरबान हो चुकी थी। सो, 10 दिन तक चले ऑडिशन के बाद विनोद खन्ना ने अंजला से कहा कि अपना पासपोर्ट तैयार रखना। तुम हमारे साथ इंडिया जा रही हो।

इत्तेफाक से उन दिनों अंजला के एग्जाम्स हो चुके थे और कॉलेज की छुट्टियां चल रही थी। इसलिए उन्होंने अपनी मां को साथ लिया और हिमालय पुत्र में काम करने भारत आ गई। इस तरह हिमालय पुत्र से अक्षय खन्ना के साथ-साथ अंजला जवेरी का भी डेब्यू हुआ।

हालांकि वो फिल्म फ्लॉप हो गई। अंजला इंग्लैंड वापस लौट गई। फिर लगभग दो महीने बाद अंजला फिर से भारत आई। इस दफा उन्होंने रुख किया साउथ फिल्म इंडस्ट्री का। और अंजला के डस्की लुक्स ने साउथ में उन्हें सफलता दिला दी।

अंजला की दूसरी हिंदी फिल्म थी बेताबी, जिसमें ये अरशद वारसी के अपोजिट दिखी। इस फिल्म में चंद्रचूर सिंह और मयूरी कांगो भी थे। ये फिल्म भी फ्लॉप हो गई। और इसी के साथ हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में हीरोइन बनकर नाम कमाने की अंजला की उम्मीद भी खत्म हो गई।

उन्होंने फैसला किया कि वो हिंदी फिल्मों में सपोर्टिंग भूमिकाएं भी निभाया करेंगी। तब अंजला को मिली प्यार किया तो डरना क्या। ये वही फिल्म है जिसमें सलमान खान और काजोल हीरो-हीरोइन थे। अंजला इस फिल्म में अरबाज खान संग रोमांस करते नजर आई थी। इस फिल्म का गाना तेरी जवानी बड़ी मस्त-मस्त है अंजला पर ही फिल्माया गया था। हिंदी फिल्मों में तो अंजला को सपोर्टिंग कैरेक्टर्स भी अच्छे ना मिल सके। लेकिन साउथ इंडस्ट्री में ये अच्छी-खासी मशहूर हो चुकी थी। वहां अंजला ने कई बड़े स्टार्स के अपोजिट काम किया। लेकिन फिर धीरे-धीरे अंजला साउथ इंडस्ट्री से भी गायब हो गई। आखिरी दफा अंजला दिखी थी 2012 में आई तेलुगू फिल्म लाइफ इज ब्यूटीफुल में। उसके बाद से ही अंजला ग्लैमर वर्ल्ड से पूरी तरह से दूर हैं। अंजला ने मॉडल-एक्टर तरुण अरोरा से शादी की है। तरुण अरोरा वही हैं जो शाहिद-करीना की फिल्म जब वी मेट में करीना के बॉयफ्रेंड अंशुमन बने थे।

जन्मदिन विशेष

क्यों फिल्मों से दूर हुई बबीता

नई दिल्ली। लगभग छह साल लंबे अपने करियर में बबीता ने 19 फिल्मों में काम किया और फिर रणधीर कपूर संग शादी करके उन्होंने फिल्मों को अलविदा कह दिया। कहा जाता है कि राज कपूर नहीं चाहते थे कि उनके घर की बहू फिल्मों में काम करें। इसिलिए बबीता को फिल्मों से खुद को दूर करना पड़ा।

बाद में उनकी दोनों बेटियां करिश्मा कपूर और करीना कपूर फिल्म इंडस्ट्री का बहुत बड़ा नाम बनी। हालांकि जब करीना कपूर का जन्म हुआ था तब बबीता रणधीर कपूर से अलग रहने लगी थी। और इस अलगाव की वजह थी रणधीर कपूर का शराब की लत में पूरी तरह से डूब जाना। रणधीर कपूर का करियर जब पतन की तरफ बढ़ चला तो वो डिप्रेशन में आ गए थे और बहुत ज्यादा शराब पीने लगे थे।

बबीता का जन्मदिन है। 20 अप्रैल 1947 को बबीता का जन्म कराची में हुआ था। हिंदी सिनेमा की बहुत नामवर अदाकारा रही साधना बबीता की कजिन थी। बबीता के पति हरी शिवदसानी साधना के सगे चाचा थे। हालांकि साधना व बबीता का रिश्ता कभी अच्छा नहीं रहा।

बबीता की पहली फिल्म थी 1966 में आई दस लाख। इस फिल्म में उनके हीरो थे संजय खान। और ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर हिट रही थी। बबीता की अदाकारी की भी जमकर तारीफें हुई थी। पहली ही फिल्म के बाद बबीता के साथ फिल्म करने के लिए उस वक्त के कई हीरोज एक्सायटेड होने लगे थे।

1967 में आई फर्ज बबीता के करियर की सबसे बड़ी हिट साबित हुई थी। फर्ज में इनके अपोजिट जितेंद्र थे। जितेंद्र के साथ बबीता औलाद, अनमोल मोती व बनफूल में भी दिखी थी। और ये सभी फिल्में भी हिट रही थी। बबीता ने करियर की दूसरी फिल्म की थी राज जिसमें उनके अपोजिट थे राजेश खन्ना।

ये फिल्म फ्लॉप हो गई थी। मगर राजेश खन्ना के साथ आई इनकी दूसरी फिल्म डोली(1969) जरूर कामयाब रही थी। शशि कपूर के साथ बबीता दिखी थी 1968 की हसीना मान जाएगी में। ये फिल्म हिट रही थी। बरसों बाद बबीता की बड़ी बेटी करिश्मा ने भी इसी नाम की एक फिल्म में काम किया था।

और जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खरीदी झालमुड़ी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पश्चिम बंगाल के झारग्राम में खाने का वीडियो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है. यह घटना

सड़क किनारे दुकान पर झालमुड़ी 19 अप्रैल 2026 की है, जब वह बंगाल विधानसभा चुनाव के लिए प्रचार कर रहे थे.

झारग्राम में जनसभा के बाद हेलीपैड ग्राउंड जाते समय पीएम मोदी ने अचानक अपना काफिला रुकवाया और कॉलेज मोड़ के पास एक स्थानीय दुकानदार से झालमुड़ी खरीदी. पीएम मोदी ने दुकानदार से ₹10 रुपए देना है न...₹ कहते हुए झालमुड़ी का स्वाद लिया और इस दौरान स्थानीय पारंपरिक फूड के बारे में जानकारी भी ली.

झालमुड़ी खाते और पैसे देते हुए पीएम मोदी का यह वीडियो सोशल मीडिया पर काफी चर्चित हो रहा है. भाजपा इस समय पश्चिम बंगाल में चुनाव प्रचार में लगी हुई है, जिसके तहत पीएम मोदी की लगातार रैलियां आयोजित की जा रही हैं.

पश्चिम एशिया संकट के बीच ग्रामीण योजनाओं की निरंतरता सुनिश्चित करने में जुटा ग्रामीण विकास मंत्रालय

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया की मौजूदा स्थिति और उसके कारण वैश्विक सप्लाई चेन, वस्तुओं की कीमतों तथा महंगाई पर संभावित प्रभाव को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण विकास मंत्रालय ने देशभर में चल रही प्रमुख ग्रामीण कल्याण और आधारभूत ढांचा योजनाओं की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए व्यापक समीक्षा की है। मंत्रालय ग्रामीण रोजगार, आवास निर्माण, सड़क विकास और जल संरक्षण योजनाओं पर संभावित असर की लगातार निगरानी कर रहा है। लाभार्थियों को समय पर सहायता मिले, फंड की उपलब्धता बनी रहे और योजनाओं का कार्य सुचारु रूप से चलता रहे, इसके लिए आवश्यक कदम उठाए गए हैं।

रोजगार और मजदूरी सुरक्षा :- महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा), 2005 प्रस्तावित VB–GRAM G Act] 2025 लागू होने तक पूरी तरह प्रभावी रहेगा। ग्रामीण परिवारों को रोजगार उपलब्ध कराने में कोई बाधा नहीं आएगी। मनरेगा के तहत मांग पर रोजगार देने, समय पर मजदूरी भुगतान सहित सभी कानूनी अधिकार पहले की तरह जारी रहेंगे। केंद्र सरकार द्वारा तय वर्तमान मजदूरी दरें लागू रहेंगी। मजदूरी भुगतान समय पर हो, इसके लिए लगभग ₹17,744 करोड़ की पहली किस्त जारी की जा रही है। नया कानून लागू होने पर 125 दिनों के रोजगार की बेहतर गारंटी दिए जाने का प्रस्ताव है।

संशोधित मजदूरी दरें अलग से घोषित की जाएंगी। ग्रामीण आवास योजना पर विशेष ध्यान :- ग्रामीण क्षेत्रों में "सभी के लिए आवास" लक्ष्य को पूरा करने के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (PMAY&G) के तहत मार्च 2029 तक 4.95 करोड़ घरों के निर्माण का लक्ष्य रखा गया है। निर्माण सामग्री की आपूर्ति या कीमतों में उतार-चढ़ाव की संभावना को देखते हुए समय पर DBT भुगतान, AwaasSoft से निगरानी, जियो-टैगिंग और अधूरे घरों को शीघ्र पूरा करने पर जोर दिया जा रहा है।

भारत की विविध जलवायु के लिए एक जैसे मॉडल नहीं, बल्कि विशेष समाधान आवश्यक

ग्लोबल वार्मिंग की वजह से दुनियाभर में खतरे पैदा हो रहे : डॉ. जितेंद्र सिंह

नई दिल्ली। केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और पीएमओ, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने आज कहा कि भारत "इंडिया कूलिंग एक्शन प्लान" के कार्यान्वयन के माध्यम से सतत कूलिंग और जलवायु लचीलापन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत कर रहा है। उन्होंने बताया कि देश के 250 से अधिक शहरों में पहले ही लागू किया जा चुका है। उन्होंने यह भी कहा कि वैश्विक तापमान वृद्धि यानि ग्लोबल वॉर्मिंग दुनिया भर में स्वास्थ्य, पर्यावरण और समग्र अर्थव्यवस्था के लिए खतरे पैदा कर रही है। ग्लोबल हीट एंड कूलिंग फोरम को संबोधित करते हुए डॉ. सिंह ने कहा कि बढ़ता तापमान केवल पर्यावरणीय चिंता नहीं है, बल्कि यह सीधे तौर पर स्वास्थ्य जोखिमों में वृद्धि से भी जुड़ा है, जिसमें संक्रामक और असंक्रामक दोनों प्रकार की बीमारियां शामिल हैं।

उन्होंने भारत-विशिष्ट अनुसंधान और समाधान की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि हीट स्ट्रेस डेंगू से लेकर हृदय संबंधी रोगों तक विभिन्न बीमारियों को प्रभावित कर रहा है, जिससे जलवायु प्रतिक्रिया को सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राथमिकता बनाना

अनिवार्य हो गया है। डॉ. सिंह ग्लोबल हीट एंड कूलिंग फोरम के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे, जिसका आयोजन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए), कोएलिशन फॉर डिजास्टर रेजिलिएंट इंफ्रास्ट्रक्चर (सीडीआरआई), प्राकृतिक संसाधन रक्षा परिषद (एनआरडीसी) और अन्य हितधारकों की भागीदारी से किया गया। इस सत्र में जलवायु, आपदा लचीलापन और सतत विकास से जुड़े प्रमुख राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों का प्रतिनिधित्व करने वाले विशेषज्ञ- डॉ. कृष्ण वत्सा, डॉ. निशा मेंदीरत्ता, श्री मनीष बापना, सुश्री दीपा सिंह बागाई, डॉ. एडेल थॉमस और डॉ. राधिका खोसला सहित उपस्थित रहे। डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न गर्मी एक वैश्विक घटना है, जो हर क्षेत्र को प्रभावित कर रही है, लेकिन भारत अपनी विविध जलवायु परिस्थितियों के कारण एक विशिष्ट स्थिति का सामना कर रहा है, जहां अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों में एक साथ अत्यधिक गर्मी और अत्यधिक ठंड का अनुभव होता है। उन्होंने कहा कि यह विविधता एक जैसे वैश्विक मॉडलों को अपनाने के बजाय अनुकूलित रणनीतियों की मांग करती है। बीमारियों के बदलते स्वरूपों का उल्लेख करते हुए डॉ. सिंह ने कहा कि आज भारत एक साथ उष्णकटिबंधीय बीमारियों और जीवनशैली से जुड़ी गैर-संक्रामक बीमारियों से जूझ रहा है। बढ़ता तापमान दोनों श्रेणियों को और गंभीर बना रहा है, जिससे विशेष रूप से हृदय रोग और मधुमेह जैसी स्थितियों वाले लोगों की संवेदनशीलता बढ़ रही है। उन्होंने जलवायु विज्ञान और स्वास्थ्य प्रणालियों को जोड़ने वाले एकीकृत अनुसंधान की आवश्यकता पर बल दिया। मंत्री ने मानव अनुकूलन क्षमता में हो रहे बदलाव की ओर भी ध्यान दिलाया और कहा कि आधुनिक कूलिंग प्रणालियों पर बढ़ती निर्भरता ने प्राकृतिक सहनशीलता स्तर को प्रभावित किया है। उन्होंने कूलिंग की उपलब्धता और स्थिरता के बीच संतुलन बनाए रखने के महत्व को रेखांकित करते हुए एयर कंडीशनिंग के अत्यधिक उपयोग के प्रति सावधान किया, जो ऊर्जा खपत बढ़ाता है और पर्यावरण तथा अर्थव्यवस्था पर अतिरिक्त दबाव डालता है।

डॉ. सिंह ने इस बात पर जोर दिया कि कूलिंग समाधानों तक समान पहुंच सुनिश्चित की जानी चाहिए, क्योंकि पहुंच में असमानता सामाजिक असमानताओं को और बढ़ा सकती है। साथ ही उन्होंने जिम्मेदार उपभोग व्यवहार अपनाने की आवश्यकता बताई और कहा कि उचित तापमान सेटिंग से ऊर्जा की मांग में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकती है और राष्ट्रीय संसाधनों की बचत में योगदान दिया जा सकता है। डॉ. सिंह ने कहा कि 140 करोड़ से अधिक आबादी के साथ भारत वैश्विक जलवायु कार्रवाई में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। उन्होंने कहा कि गर्मी और शीतलन के प्रबंधन के लिए देश के दृष्टिकोण का असर न केवल घरेलू स्तर पर बल्कि वैश्विक स्तर पर भी प्रभाव डालेगा। उन्होंने दोहराया कि सरकारी एजेंसियों, अनुसंधान संस्थानों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के सहयोगात्मक प्रयास व्यावहारिक, मापनीय और समावेशी समाधान विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। डॉ. जितेंद्र सिंह ने अपने संबोधन का समापन करते हुए ऐसे मंचों से ठोस और क्रियान्वयन योग्य परिणामों की आवश्यकता पर जोर दिया और कहा कि समाधान तत्काल और व्यावहारिक कदमों से शुरू होने चाहिए।

स्वामी एवं प्रकाशक मौ. वसी के लिये मुद्रक नुसरत निशान खान द्वारा कौमी गुलदस्ता प्रिंटर्स, विलेज आमवाला, पोस्ट घंघौरा, देहरादून द्वारा, उत्तराखण्ड-248141 से मुद्रित एवं 5, लेन नम्बर 2, नामदेव एन्क्लेव फेस 2, ब्राहम्णवाला, देहरादून उत्तराखण्ड- 248171 से प्रकाशित। सम्पादक-मौ. वसी,
समस्त विवाद के लिये न्याय क्षेत्र देहरादून मान्य होगा। सम्पर्क- 9411112331
हमारे अखबार के ताजा अंक को ऑनलाइन पढ़ने के लिये www.aawamindia.com वेबसाइट पर जायें।
facebook: www.facebook.com/indiaaawam, youtube:www.youtube.com/@aawamindia,
X:www.x.com/aawamindia, Instagram:https://instagram.com/aawamindia